इच्छा पूर्ति
आनंद पूर्ति नहीं है!

'मनुष्य'
एक अद्वितीय स्थिति है।

हर शब्द पर गम्भीर मनन व चिन्तन की आवश्यकता है।

'मनुष्य' एक स्थिति है, अद्वितीय स्थिति, 'मनुष्य'। **हम 'मनुष्य' नहीं हैं, हम एक अद्वितीय स्थिति में हैं।** 'मनुष्य', एक अद्वितीय स्थिति है किन्तु स्थिति है। मनुष्य से नीचे होते हैं, पशु इत्यादि। इन्होंने जैसा होना होता है वैसे ही होते हैं..., आपको बताएँगे! यह मनुष्य से नीचे की स्थिति है, मनुष्य भी एक स्थिति है। एक मनुष्य से श्रेष्ठ, उच्च..., ऊपर की नहीं, ऊपर की नहीं..., उच्चतम अवस्था है, जिससे ऊपर कोई स्थिति नहीं है वह भी एक स्थिति है। वह क्या स्थिति है? वह उनकी स्थिति है जो आनन्दमय हैं जीव। आनन्दमय अवस्था की- 'उच्चतम स्थिति'। उन्होंने जो करना था, कर चुके, जो पाना था, पा चुके। 'निम्न अवस्था', उन्होंने जो होना है वही होंगे। परन्तु इन दोनों अवस्थाओं के बीच में, एक स्थिति है 'मनुष्यों की स्थिति', वह काफ़ी तनाव युक्त स्थिति है, चिन्तन युक्त। क्यों? क्योंकि उन्होंने जो होना है वह अभी हुए नहीं हैं और जो नहीं होना चाहिए उसमें हैं। जो होना है..., क्या होना है? 'आनन्दमय अवस्था' में, वह अभी हुए नहीं हैं और जो नहीं होना चाहिए, 'पशु अवस्था' में, वह हैं। इसलिए हमेशा तनाव... हमेशा...

जो आप हो सकते हो आपको मालूम है और वह आप नहीं हो पाए, तनाव..., तनाव तो स्वभाविक है। और जो आप नहीं होना चाहते उसी में लिप्त पड़े हो, तो तनाव होना स्वभाविक है। किसी को बोलें कि, "तू जानवर का जानवर ही रह", कितना बुरा लगता है न? लगता है कि नहीं बुरा? इन्सान को बोला जाए, "तू जानवर का जानवर ही रह"। किसी को बोला जाता है, "तू बिल्ली की बिल्ली ही रह?" नहीं बोला जाता, "तू मछली की मछली ही रह", कोई नहीं बोला जाता... क्योंकि उन्होंने वही रहना है। परन्तु इन्सान कुछ एक कार्य..., ऐसे कार्य करता है कि उससे जानवर और इन्सान में कोई भेद नहीं रह जाता।

हमने बताया मनुष्य एक स्थिति है, यह आनन्दमय अवस्था में जा सकती है व पशु की तरह भी जीवन यापन कर सकती है..., करती है ज़्यादातर।

अब यह आनन्दमय अवस्था क्या होती है? पशु क्या होता है? इस बात को अच्छी तरह step by step **समझने की, चेष्टा करेंगे।**

आप देखें, आप किसी मुसलमान से पूछें, 'आप क्या चाहते हो?' क्या बोलेंगे? 'मैं सुख चाहता हूँ'। किसी सरदारजी को बोलें, 'आप क्या चाहते हो?' वे क्या बोलेंगे? 'सुख चाहता हूँ', किसी जैनी को बोलें, 'आप क्या चाहते हो? क्या बोलेंगे? 'सुख।' किसी याहूदी को बोलें, 'आप क्या चाहते हो?' 'सुख'... किसी बौद्ध को बोलें, 'क्या चाहते हो?' 'सुख।' आप किसी Korean को बोलें, किसी Yugoslavia के व्यक्ति को बोलें, Chinese को बोलें, इन्द्र को बोलें, ब्रह्मा को बोलें, किसी को बोलें, हर कोई क्या बोलेगा? मैं क्या चाहता हूँ? आप देखिए सब एक चीज़ चाहते हैं, सब... अच्छा, यह तो छोड़ दीजिए। आप किसी नास्तिक को बोलें, नास्तिक को बोलें, 'आप क्या चाहते हो?' क्या बोलेगा? क्या बोलेगा नास्तिक भी? 'सुख चाहता हूँ'... अच्छा किसी आस्तिक को बोलोगे तो? अरे! आस्तिक भी सुख चाहता है। आश्चर्य? किसी भी योनि के, किसी भी व्यक्ति को बोलें..., पूछें, आप क्या चाहते हो? उत्तर है - 'सुख'। जब सब सुख चाहते हैं तो कोई सुख एक ऐसी वस्तु होगी न...? जब सबको एक ही चीज़ चाहिए तो सुख एक वस्तु है, वह सुख क्या है?

अगर कोई बोले कि मुझे कोहिनूर हीरा चाहिए तो कोहिनूर तो एक ही होगा, ऐसा तो नहीं सोच सकते कि मेरे अनुसार ऐसा है कोहिनूर हीरा, कोई बोले मेरे अनुसार ऐसा है, तीसरा बोले... ऐसा नहीं होगा। सबको एक ही..., एक ही कोहिनूर हीरा चाहिए, तो कैसा है एक? एक जैसा ही होगा। अगर कोई बोले कि, 'मुझे Prime Minister of India से मिलना है', तो एक ही है व्यक्ति, उसी को चाहना होगा। उसी प्रकार आनन्द, सब चाहते हैं..., सब चाहते हैं? और कब चाहते हैं? अगर आपसे पूछे, 'आप कब चाहते हो आनन्द?' क्या बोलोगे? अगर हम आपसे पूछें कि, 'आप ३६५ दिन आनन्द चाहते हो?' क्या बोलोगे? 'हाँ मैं रोज़ आनन्द चाहता हूँ।' 'अच्छा, रोज़ आनन्द चाहते हो..., ३६५ दिन। अच्छा, क्या २४ घण्टे आनन्द चाहते हो?' '२४ घण्टे आनन्द।' 'क्या हर घण्टे आनन्द चाहते हो?' 'हाँ, हर घण्टे आनन्द।' 'हर घण्टे में क्या हर ६० के ६० मिनट आनन्द चाहते हो?' '६० के ६० मिनट आनन्द चाहता हूँ, सुख चाहता हूँ।' 'अच्छा, हर ६० मिनट में, हर मिनट सुख चाहते हो?' 'हर मिनट सुख चाहता हूँ।' 'अच्छा क्या हर मिनट में हर second सुख चाहते हो?' 'हाँ, हर second सुख चाहता हूँ।'

जब आप इतना तीव्रता से, इतने पागलपन तक किसी चीज़ को चाहते हो तो क्या यह कर्तव्य नहीं बनता जान तो लो कि यह सुख होता क्या है? आप एक चीज़ को निरन्तर, प्रत्येक क्षण जिसके पीछे लगे हुए हो, आपको यह जानना नहीं चाहिए, without fail कि यह सुख होता क्या है, यह आनन्द है क्या? आनन्द है क्या?

सामान्य व्यक्ति से बोलें कि, 'भाई ! आनन्द क्या है बताओ?' 'जी वह तो एक ऐसी कोई भावना है जिसे व्यक्त नहीं किया जा सकता।' यही..., यही सुनने में आता है? कि आनन्द कोई एक अवस्था है। यही सुनने में आता है? जितने लोग उतने..., उतने मत। इस संसार में कितने लोग हैं? भारत में कितने लोग हैं? सवा सौ करोड़ लोग होंगे लगभग? संसार में कितने लोग हैं? लगभग सात सौ करोड़ लोग? तो सात सौ करोड़ लोग और सात सौ करोड़ मत हैं सुख के, 'आनन्द ऐसा होता है', है कि नहीं है? एक का मत दूसरे से नहीं मिलता। परन्तु क्या सुख ऐसा होता है? सात सौ करोड़ तरीके से उसको सोचा जा सकता है? यह एक अज्ञानता है।

ज्ञानी बुद्ध पुरुषों से पूछा जाए, 'यह सुख क्या होता है', वे बताएँगे। इस सृष्टिकर्ता से पूछा जाए जो हमारे प्रत्येक क्षण का, एक-एक कर्म का हिसाब रख रहा है, हमारे हर एक कर्म का फल दे रहा है, जिसकी इच्छा से सूरज आता है, जिसकी इच्छा से सूरज डूबता है, जिसकी इच्छा से हवा चलती है, जिसकी इच्छा से यम आता है, जिसकी इच्छा से आप श्वास ले रहे हो, जिसकी इच्छा से आप चल रहे हो, जिसकी इच्छा से यह सृष्टि चल रही है, जिसकी इच्छा से सृष्टि का प्रलय होगा, वे बताएगा कि सुख क्या है और तुम क्या हो, न कि तुम खुद बताओगे, तुम तो बीच में आए हो सृष्टि के। इस सृष्टि के सबसे पहले व्यक्ति कौन हैं? ब्रह्मा। ब्रह्मा से पूछा कि भई सुख क्या होता है? वे क्या जवाब दे रहे हैं-

"आनन्द-चिन्मय-सदुज्जवल-विग्रहस्य,
गोविन्दमादिमुरुषं तमहं भजामि।।"

(ब्रह्मसंहिता)

'आनन्द', 'चिन्मय', 'सदोज्जवल', 'विग्रहस्य'...
'विग्रहस्य'..., आनन्द विग्रहस्य..., कोथा विग्रहस्य आनन्द? 'गोविन्द'।
'गोविन्दमादिमुरुषं तमहं भजामि', यह जो आनन्द है, ये विग्रह हैं, ये एक व्यक्ति हैं।

ब्रह्मा सृष्टि के वे व्यक्ति हैं जिनको उन्होंने भेजा है सृष्टि करने के लिए, उनकी प्रेरणा से वे बता रहे हैं ब्रह्मा कि आनन्द क्या है? आनन्द विग्रह हैं..., *आनन्द विग्रहस्य,* (ब्रह्मसंहिता)। 'गोविन्द', वे आनन्द का स्वरुप हैं। वेद क्या बोलते हैं गोविन्द के बारे में? हरि के बारे में? भगवान् के बारे में? *'आनन्दं ब्रह्म'*..., वे ब्रह्म, जिसकी इच्छा से सृष्टि होती है, जिसकी इच्छा से शिव, ब्रह्मा, इन्द्र सब कार्य करते हैं, वे ब्रह्म, वे परमात्मा, वे भगवान्, वही आनन्द हैं।

"विज्ञानम् आनन्दं ब्रह्म"

(बृहदारण्यक उपनिषद् - ३.९.२८)

'आनन्दं ब्रह्म'। यह नहीं बोला- 'आनन्दं ब्रह्मणी'..., आनन्दं ब्रह्मणी बोलते तो मतलब, ब्रह्म 'में' आनन्द है। *'आनन्दं ब्रह्म'*, ब्रह्म 'ही', भगवान् 'ही' आनन्द हैं। तैत्तिरीय उपनिषद् क्या बताता है?

"रसो वै सः"

(तैत्तिरीय उपनिषद् २.७.१)

वे..., वे भगवान् ही रस हैं, वे भगवान् ही आनन्द हैं।

जब कुब्जा ने श्रीकृष्ण का आलिंगन किया, दशम् स्कन्द में बताया जाता है, जब कुब्जा ने आलिंगन किया तो क्या बोला, उन्होंने कृष्ण का आलिंगन किया? नहीं। भागवत् बताती है, भगवान् वेद व्यास बताते हैं, उन्होंने आनन्द का आलिंगन किया। तो आनन्द जो है वे भगवान् हैं। यदि हमने प्रश्न किया था कि हम ३६५ दिन चाहते हैं आनन्द, तो हम ३६५ दिन क्या चाहते हैं? 'कृष्ण'। हम ३६५ दिन अगर कृष्ण चाहते हैं तो रोज़ क्या चाहते हैं? 'कृष्ण'। अच्छा रोज़ में हर घंटे क्या चाहते हैं? 'कृष्ण'? ओ... और हर मिनट? 'कृष्ण' और हर second? 'कृष्ण', हम कृष्ण चाहते हैं।

Happy New Year बोलने से नहीं होगा... The only thing new in our life is happiness ! Otherwise everything is old... एकमात्र नई चीज़ जो है, वह "आनन्द" है, क्योंकि हमारे जीवन में कृष्ण के अलावा सब कुछ है, आनन्द के अलावा सब कुछ है। जबकि प्रत्येक क्षण क्या चाहते हैं? 'आनन्द'। तो समस्या क्या है? आनन्द 'कृष्ण' हैं और हम क्या सोचते हैं? कुछ और आनन्द है। हमारी एक ही need है, क्या need है हमारी? क्या requirement है हमारी, जीव की? बोलो? 'आनन्द'। मेरी एक ही requirement है 'आनन्द', मेरी एक ही requirement है 'कृष्ण'। मुझे और कुछ नहीं चाहिए..., मुझे बीवी नहीं चाहिए, मुझे बच्चे नहीं चाहिए, मुझे धन नहीं चाहिए, मुझे क्या चाहिए? आनन्द! बस! और कुछ नहीं। हमारी एक ही पूर्ति..., यह जो खालीपन है न हमारे हृदय में, उसकी पूर्ति करना चाहते हैं हम, 'खालीपन की पूर्ति'..., आनन्द पूर्ति करना चाहते हैं हम।

आनन्द पूर्ति हम कैसे करते हैं? कैसे करने की कोशिश कर रहे हैं? अब हम समस्या पर आ रहे हैं। इच्छा पूर्ति से। हम सोच रहे हैं कि इच्छा पूर्ति ही आनन्द पूर्ति है, यह है

सारी बिमारी। हम सोच रहे हैं..., 'मेरे मन की बात पूरी हो जाए तो मैं आनन्दमय हो जाऊँगा'। आप बताइए, किसी शास्त्र में यह बात लिखी है कि आपकी मन की बातें मान लो तो आप आनन्दमय हो जाओगे? आप भगवान्-मय हो जाओगे? मन की बातें मानकर भगवान्-मय हो जाओगे? यह कौन सी philosophy है? कौन से वेद में लिखा है? भागवत् में लिखा है बताओ हमें..., कौन-से वेद में लिखा है? कुरान में लिखा है? कहाँ लिखी है यह बात? कि तुम अपने मन की बात से..., अपने मनमाने तरीके से चल लोगे..., बोले, 'मैं आनन्दमय रहना चाहता हूँ', कैसे? मनमाने तरीके से, यह कौन से ग्रन्थ में लिखा है मनमाने तरीके से चलने से आनन्द मिलेगा? गीता तो कुछ और कह रही है, गीता कहती है, 'मन्मना', 'मन माना नहीं'।

"मन्मना भव मदभक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु।
मामेवैष्यसि युक्त्वैवमात्मानं मत्परायणः।।"

(गीता-९.३४)

न कि *'मन माना भव मदभक्तो'*। जब तुम्हारा मन मुझ में लगेगा, तो तुम... मैं कौन हूँ? 'आनन्द'। जब तुम मुझ में रमोगे तो ही तो आनन्दमय होगे।

"रसं ह्येवायं लब्ध्वानन्दी भवति"

(तैत्तिरीय उपनिषद् २.७.१)

तुम मुझे प्राप्त करके ही आनन्दी हो जाओगे।

हमने बताया मनुष्य एक स्थिति है, 'स्थिति'... इस स्थिति में जीव आनन्दमय हो सकता है, कैसे हो सकता है? केवल मनुष्य यह समझ सकता है कि आनन्द क्या है और आनन्द को कैसे पाया जाएगा। मनुष्य से जो नीचे के जो स्तर हैं, पशु का स्तर है। आप पशु के स्तर को समझना चाहेंगे, क्या होता है? क्या होता है पशु का स्तर? एक होता है व्यक्ति जो आनन्दमय है। आनन्दमय मतलब, जिसे मालूम है- 'कृष्ण ही आनन्द हैं और कुछ आनन्द नहीं है', इसका मतलब यह है कृष्ण आनन्द हैं और बाकि कुछ आनन्द नहीं है। जैसे आपको बोलें, 'यह bottle आनन्द है', आप मानेंगे? आपको बोलें, 'यह mike आनन्द है' आप मानेंगे? नहीं है आनन्द। उसी प्रकार से...

Bottle is a bottle, bottle is not 'happiness',
Mike is mike, mike is not 'happiness',
Cloth is cloth, cloth is not 'happiness',

Wife is wife, wife is not 'happiness',
Kids are kids, kids are not 'happiness',
House is house, house is not 'happiness'!

जो है वह है, वह आनन्द नहीं है, आपको equate करने को किसने कहा है कि इसको आनन्द से equate कर दो? यह बिमारी है। आप कहो shawl है..., नहीं यह shawl आनन्द है...

Shawl is a shawl, shawl is not happiness,
House is house, house is not happiness,
Marriage of your kids is just marriage of your kids, it is not happiness !

बोलते हैं न, 'मैं तो खुश हो जाऊँगा, मेरे बच्चों की शादी हो जाए'। वह तो बात ठीक है..., but marriage of your kids is ultimately plain marriage of your kids only, it has got nothing to do with happiness. We have to understand this thing very clearly, if we ever want to become happy !

महाभारत में श्लोक आता है...

"आहार-निद्रा-भय-मैथुनं च
सामान्यमेतत्पशुभिर्नराणाम्।
धर्मो हि तेषामधिको विशेषो
धर्मेण हीनाः पशुभिः समानाः।।"

(महाभारत, हितोपदेश प्रस्ताविका-२५)

जो व्यक्ति यह मानता है कि खाने में सुख है और परिवार में सुख है और हँसी-खुशी इसमें सुख है, वह क्या है? पशु के समान है।

तो हम देख लें कि हम यही चाहते हैं basically? 'हमारा परिवार हो, हमारे बच्चे सब सुखी रहें, हमारी family सब सुखी रहे'। अगर यह हमारी mentality है तो भगवान् का मत है कि वह व्यक्ति पशु है। और पशु ऐसी स्थिति है वह कभी खुश नहीं हो सकता। जब हम यह अच्छी तरह समझ जाएँगे भगवान् ही आनन्द हैं और बाकि कुछ आनन्द नहीं है तो ही उस अवस्था में पहुँच पाएँगे। You cannot have a cake and eat it too..., either

you can have a cake or you can eat it. उसी प्रकार से, या तो आप सही आनन्द..., सही, सही रूप से आनन्द को पकड़ोगे या, पशु की अवस्था में रहोगे।

यह पशु की अवस्था क्या है? 'खाने में सुख मानना', 'परिवार में सुख मानना' और 'हम हँसी खुशी रहें बस', इसमें सुख मानना और इसमें जीवन यापन कर देना पूरे का पूरा। यह पशु की अवस्था है। इससे कभी भी आनन्द प्राप्त नहीं होने वाला। मानव जीवन धारण करके भी हम किस चीज़ में सुख मानते हैं? किस चीज़ में सुख मानते हैं? कि 'अच्छा खाकर मैं खुश हो जाऊँगा'। देखिए, हम यहाँ कोई कथाएँ नहीं सुना रहे..., अगर जो हम प्रवचन दे रहे हैं इसमें दिमाग पर बहुत ज़ोर डालना पड़ेगा, तब समझ आएगा, क्योंकि यह Life Solution है, यह कोई कथा नहीं है कि हाँ सुने और बहुत अच्छी बात है... राम ने यह किया और श्याम ने यह किया और मैं वैसे का वैसा। मैंने तो कुछ नहीं किया... 'As it is', 'भगवद् गीता as it is'... बिल्कुल वैसे - 'यथारूप', नहीं यथारूप नहीं। 'हरि कथा' का मतलब यही है कि जिस कथा में बैठे हो, खड़े हो तो नए व्यक्ति बनकर खड़े हो, वह व्यक्ति same खड़ा हो गया तो आपने हरि कथा ही नहीं सुनी, अगर same व्यक्ति खड़ा हो गया...

अगर कोई व्यक्ति खाने में सुख मानता है या कपड़े में सुख मानता है, या परिवार में सुख मानता है, तो क्या मानने से कोई चीज़ सुख..., सुख हो जाता है क्या? मान लो..., मानने से सुख हो जाता है क्या? अगर हम खाने में सुख मान रहे हैं, जैसे ही desire हुई, कोई भी चीज़ की desire हुई... आपकी क्या desire है? आपकी need क्या है? क्या requirement है आपकी? 'आनन्दपूर्ति'? 'आनन्दपूर्ति' आप कैसे करना चाहते हो? 'Desire पूर्ति' से। Desire का natural characteristic है 'ignorance'... अगर आप कोई चीज़ desire कर रहे हो 'material खाना', इसका मतलब है 'आप ignorant हो, अज्ञानता में हो।' आप आत्मा हो, अगर आप खाने की चीज़ desire कर रहे हो, तो सबसे पहले आप आनन्द को भूल गए कि वे भगवान् हैं और स्वयं को भूल गए कि आप आत्मा हो। अगर आपने खाने की भी इच्छा की..., 'मुझे pizza खाना है', तो दो चीज़ें सबसे साथ-साथ में हुई - एक तो 'हरि को भूले' और 'एक स्वयं को भूले', जो व्यक्ति खुद को भूल गया, हरि को भूल गया, वह आनन्दमय कैसे होगा? यह बता दीजिए।

आपने खाने की इच्छा की..., की? कि 'मैं pizza खाकर सुख हो जाऊँगा...' आप बताइए, आपका size क्या है? आत्मा का size क्या है? आप आत्मा ही हो...? क्या

size है? इस बाल के आगे के हिस्से का दस हज़ारवाँ हिस्सा। बाल..., the tip..., the tip of the hair, उस tip of the hair को दस हज़ार में divide कर दो। कभी कुछ खा सकती है? तो जैसे ही आपने कहा - 'मैं गोलगप्पे खाऊँगा', तो इसका मतलब आप स्वयं को भूले... आप कोई भी चीज़ क्यों करना चाहते हो? आपने बोला हर क्षण आनन्द चाहते हो, तो हर उस क्षण भी, जब आप गोलपप्पे खाना या pizza खाना चाहते हो, आप आनन्द चाहते हो? अगर आपके अन्दर खाने की इच्छा हुई तो इसका मतलब आप स्वयं को भूले और आनन्द को भूले और अब आप आनन्द चाहते हो... हालत देख रहे हो अपनी?

बोले, 'मैं यह branded कपड़े पहनकर खुश होऊँगा...', बहुत अच्छी बात है, पहनोगे कैसे यह बताओ। आप आत्मा हो? अगर branded कपड़े पहने तो brand तो हरि तो बन नहीं गया। आप आनन्दमय कैसे होगे, बताओ? आप मेरी बात समझ पा रहे हैं? हाँ...? 'आनन्द' भगवान् हैं और कुछ नहीं है। आपको 'आनन्द' चाहिए, आपको हर क्षण 'कृष्ण' चाहिए। जिस क्षण आप कृष्ण के अलावा कुछ भी चाह रहे हैं वह अपनी मूर्खता का प्रदर्शन कर रहे हैं और कुछ नहीं। Open advertisement, look i am a fool ! सबको, open ! आप यहाँ आए हैं, जैसे आए हैं वैसे जाएँगे तो कोई लाभ नहीं है। बिल्कुल नया व्यक्ति जाना चाहिए, जो आया है वह न जाए कभी भी। आप आनन्द चाहते हो, कौन आनन्द चाहता है? कौन?

अब जैसे आप..., यहाँ पर आप आए हो, कोई आपको बोले कि..., कोई आपको बोले, 'आप पश्चिम विहार हो', आपको कैसा लगेगा? आपके पीछे, हाँ..., कोई बोले, 'आप पश्चिम विहार हो', तो कैसा लगेगा आपको? आप क्या सोचोगे? 'यह जानता ही नहीं है... मैं पश्चिम विहार में हूँ।' उसी प्रकार से जैसे आप पश्चिम विहार मे हैं, वैसे ही आप इस शरीर मे हैं। 'मैं आत्मा हूँ मैं इस शरीर मे हूँ। जैसे मैं पश्चिम विहार नहीं हूँ, वैसे मैं मनुष्य भी नहीं हूँ।' आपको कोई बोले भारत..., दिल्ली बोले कोई आपको..., 'आप दिल्ली हो'..., आप 'दिल्ली' हो? आप दिल्ली में हो। आप India हो? आप India में हो, आप मनुष्य हो? नहीं, आप मनुष्य में हो। हो कौन? 'चिन्मय आत्मा'। इसको आनन्द चाहिए। समझ रहे हैं बात? इसको आनन्द चाहिए।

और आनन्द क्या है? वे हरि हैं। यह बात अच्छी तरह समझ जाएँ हर क्षण हमें हरि के अलावा और कुछ नहीं चाहिए।

अब यह होता है कि हम आनन्द पूर्ति को सोचते हैं कि इच्छा पूर्ति से आनन्द पूर्ति हो जाएगी। एक ही परिवार में, बच्चे ने दसवीं का पेपर दिया, उसके बाद बच्चा चाहता है मैं commerce लूँ, माता चाहती है, engineer बने और पिता की इच्छा है कि Doctor बने। तो सबकी इच्छा है, सब इच्छा पूर्ति क्यों कर रहे हैं? इच्छा की पूर्ति क्यों करना चाहते हैं? आनन्द के लिए। सोचो..., कोई सोचता है कि मेरे बच्चे ने science - engineer करेगा तो मैं आनन्दी हो जाऊँगा, आप अज्ञानता देख रहे हैं? वह भी, convinced हैं न पिताजी, कि वह Doctor बनना चाहिए। इच्छा strong है। किसलिए? कि मैं आनन्दी हो जाऊँगा उससे। और माता की इच्छा strong है, माता क्या चाहती हैं? 'Engineer बने', पिताजी क्या चाहते है? 'Doctor बने' और बेटा क्या चाहता है? 'मैं commerce करूँ'। और सबके मूल में क्या है? कि मैं यह करके आनन्दी हो जाऊँगा। बताओ अगर इच्छा पूर्ति में ही आनन्द है तो इस family में किसकी इच्छा पूर्ति की जाए कि आनन्द हो जाएगा? बताइए..., commerce किया जाए, arts किया जाए, science किया..., क्या किया जाए? अगर इच्छा पूर्ति में आनन्द है तो एक की ही होगी, तो दो की तो नहीं होगी इच्छा पूर्ति, यह तो confirm है? तो इसका मतलब दो लोग हमेशा दुःखद..., दुःखद अवस्था में रहेंगे क्या? नहीं। असलियत यह है कि इन तीनों में से कोई भी अवस्था आनन्दमय अवस्था नहीं है।

Your son becoming a doctor, is just becoming a doctor,
It has got nothing to do with Ānanda,
Your son becoming an engineer is just being becoming an engineer,
It has got nothing to do with Ānanda,
Your son becoming a CA is just about becoming a CA,
It has got nothing to do with Ānanda.

Why don't you understand the simple thing?
A fish is a fish,
A caramboard is a caramboard,
Wood is a wood,
And Ānanda is Ānanda,
Kṛṣṇa is Ānanda !

शादी होती है, माता चाहती हैं कि, 'भाई तू किसी से भी शादी कर ले, हमें कोई चिंता नहीं है, तू खुश रह।' अब पिता चाहते हैं कि, 'हमारी जाति में ही शादी होगी।'

इच्छा है भई अपनी-अपनी। इच्छा... बेटा चाहता है कि, 'जी मैं love marriage करूँगा...', बताओ किसकी इच्छा पूर्ति करें तो आनन्द होगा सबमें? बताइए? तीनों का, बिल्कुल अलग-अलग..., और असलियत यह है कि आपकी same कौम में शादी हो तो भी आनन्द नहीं होगा। Marriage is a marriage, marriage has got nothing to do with happiness... You marry in the same कौम, or you... अब बच्चे की शादी हो गई, Husband-Wife चाहते हैं हम बच्चा न करें, वे यह चाहते हैं..., Husband-Wife चाहते हैं बच्चा न करें, Parents चाहते हैं बच्चा करो, अब किसकी इच्छा पूर्ति हो? हर कोई सोच रहा है मेरी इच्छा पूर्ति में है। अब दोनों में से एक की होगी, तो यहाँ व्यक्ति..., दो व्यक्ति हमेशा सुखी रहेंगे और दो व्यक्ति हमेशा, दुःखी रहेंगे..., ऐसा होगा क्या? बच्चा हो, न हो..., आप खाना खाओ, न खाओ..., आप कोई भी course करो, न करो..., करोगे तो भी, it has got nothing to do with Ānanda..., नहीं करोगे, तो भी it has got nothing to do with happiness...

Happiness Is Kṛṣṇa!!

Why you..., enforcing Krsna upon your desires? Why don't you understand one simple truth of life? You want Ānanda, you want Kṛṣṇa..., that's all, full stop! No ifs-buts, किन्तु-परन्तु। आनन्द भगवान् हैं-

"आनन्द-चिन्मय-सदुज्जवल-विग्रहस्य"

Business करोगे..., तो भी उससे आनन्द नहीं मिलेगा। एक अरब कमाओगे, तो भी आनन्द नहीं ...

Money is money, money is not happiness,
Wood is wood, wood is not happiness,
Happiness is happiness !

Is this difficult to understand? This is the reality... यह इच्छा पूर्ति..., इच्छा पूर्ति क्या होती है? आपने अचानक इच्छा कर ली और आप उसको क्या करते हो, पूरे करने की कोशिश और उसको आप आनन्द की संज्ञा दे देते हो कि हाँ जी इसको आनन्द बोलते हैं। बताओ कौन से ग्रन्थ में लिखी है यह बात? कौन से Professor ने यह बात बताई है आज तक? सब यही follow कर रहे हैं? बुरा मत मानियेगा, यही करते हैं? कोई इच्छा की और उसको पूरी करने की कोशिश और उसको आनन्द की stamp दे दो, 'stamp'... 'Mr. Arora' द्वारा आनन्दित, यह कोई बात हुई?

जैसे एक मान लीजिए, आप सो रहे हैं, सोते-सोते आपने देखा कि आपकी पत्नी हैं, वह आपकी सारी बातें मानती हैं..., of course this can happen only in dreams, but..., अब मान लें कि आपकी पत्नी है, सारी बातें मानती है और आपके बच्चे हैं, एक लड़का, एक लड़की, वे भी बहुत अच्छे हैं, वे भी सारी बातें मानते हैं और आपका business है, वह भी naturally बहुत अच्छा चल रहा है और आपकी reputation भी बहुत अच्छी है और आपका एक बहुत बड़ा बंगला है, घर है, अब आपको उसकी देखभाल भी करनी है..., यह सब सपने में पहले आपने create किया, आपका यह सब कुछ है और जब यह हो गया तो सब देखभाल भी करनी होगी, तो सपने में आप देखभाल भी करनी शुरु कर रहे हैं..., strategic planning कर रहे हैं कि घर सब अच्छी तरह चलना चाहिए, बच्चे सब अच्छी तरह होने चाहिए। अचानक नींद खुल गई, तो क्या होगा सब बच्चों का और वह घर का..., क्या होगा? क्या होगा? It has got nothing to do with Happiness !

उसी प्रकार से इच्छाएँ हैं। पहले आपने इच्छा create की, मेरे अच्छे बच्चे हों, यह हो, ऐसे सब कुछ हो, मेरी पत्नी हो और घर में सब अच्छा रहे, फिर आप उसको पूर्ति करने में लगे, strategic planning कि ऐसा कैसे हो? किसी तरीके से मेरी अच्छी पत्नी हो, मेरे बच्चे बात मानें और घर में सब सही हो, यही... यही philosophy है सबकी। इसको भगवान् की language में कहते हैं - *'पशुभिः समानाः'*, कि यह पशु का जीवन है, जानवर का...

अच्छा, एक बात बताओ एक बिल्ली कैसा जीवन चाहती है? उसके बिल्ली, बिल्ला और बच्चे और अच्छे तरीके से रहें, खाएँ-पीयें, कोई उनको परेशान न करे, मारे नहीं... यही चाहती है? बुरा मत मानिये... यही चाहता है बिल्ली जीवन? अच्छा, मछली क्या जीवन चाहती है? अरे! अच्छी तरह खाओ-पीओ और सोओ। और मानव जीवन को क्या बोला गया है-

"कौमार आचरेत्प्राज्ञो धर्मान् भागवतानिह।
दुर्लभं मानुषं जन्म तदप्यध्रुवमर्थदम्।।"

(श्रीमद् भागवतम्-७.६.१)

'सुदुर्लभ', 'देवदुर्लभ'... 'देवदुर्लभ मनुष्य जीवन'।

गाय ने कैसा जीवन जिया? गाय ने?

'खाया, सोया, परिवार के साथ रहा और मर गया'।
गधे ने कैसा जीवन जिया?
'खाया, सोया, परिवार के साथ रहा और मर गया'।
और मछली ने कैसा जीवन जिया?
'खाया, सोया, परिवार के साथ रहा, मर गया'।
और चिड़िया ने?
'खाया, सोया, परिवार के साथ रहा और मर गया',
और आपने?
'खाया, सोया, परिवार के साथ रहे और मर गए'।
इसी को *'पशुभिः समानाः'* कहते हैं।
गधे के समान जीवन, उल्लू के समान जीवन, चिड़िया के समान जीवन...
क्यों?
क्योंकि खाने, पीने, सोने में, परिवार के साथ रहने में आनन्द नहीं आया, भगवान् नहीं आए।

समझ रहे हैं? मनुष्य एक 'अद्वितीय स्थिति' है जिससे आप आनन्द को समझ सकते हो कि आनन्द श्रीकृष्ण हैं, उनको प्राप्त करके मैं सदा-सदा के लिए आनन्दमय हो जाऊँगा। प्रत्येक क्षण अगर हम कृष्ण के अलावा कुछ भी चाह रहे हैं तो यह केवल अज्ञानता का प्रदर्शन है।

जैसे ही इच्छा हुई तो हमने आपको बताया कि इससे दो चीज़ें हुई कि आप 'स्वयं को भूले' और..., और 'भगवान् को भूले', क्योंकि आपको आनन्द चाहिए था। किसको चाहिए था? आप कौन? आत्मा, आप अपने आप को भूले और हरि को भूल गए, बोलिए आनन्द कैसे मिलेगा? जब हम इच्छा कर रहे हैं..., इच्छा का मतलब है कि हमारा..., जैसे मान लीजिए किसी ने इच्छा की, 'मैं fast driving car करूँगा', तो क्या fast car drive करके क्या सुखी हो जाता है कोई व्यक्ति? अच्छा, मान लीजिए वह इच्छा नहीं की थी तो आपका मन क्या था? एकदम 'शांत', शांत था वैसे उससे पहले? आप यह सोचते हैं कि इच्छा को पूर्ण करके आनन्द मिलता है जबकि यह बिल्कुल सत्य नहीं है। ध्यान..., एकदम अच्छी तरह समझ लीजिए इस बात को, हमेशा के लिए। **'इच्छा को पूर्ति करके आनन्द नहीं मिलता'**। जैसे आपने car driving की इच्छी की और car drive कर ली, आपने सोचा उससे आनन्द..., नहीं। वह जब इच्छा निवृत्त हो गई, आप..., जैसे when your mind became calm again, उसको आप happiness समझ रहे हैं। That desire just got evaporated... वह जो इच्छा थी, वह धुएँ हो गई, उड़ गई बस।

आप समझ रहे हैं? जैसे यह..., यह सफेद कपड़ा है इसमें काला धब्बा था, काला धब्बा उड़ गया तो फिर से सफ़ेद हो गया, बिना काले धब्बे के कैसे था ये सब कुछ? सफ़ेद ही था। तो जब आपने desire नहीं की थी, तो भी your mind was... calm. वह जो आपने desire की, वह एक खारिश के समान है, वह जब आपने खुजला दिया तो आपको लगा आप आनन्दमय हो गए जबकि वह कुछ नहीं है... your mind again became calm..., peaceful... That's all... It has got nothing to do with happiness. समझ रहे हैं बात को? खारिश हुई, itching है। Desire का मतलब क्या है? Itching..., खारिश, खुजलाना। अगर खारिश नहीं होती, जैसे हमारी skin है..., जिसको खारिश होती है वह खुजलाता है उसको थोड़ा सा relief होता है, जिसको है ही नहीं, तो वह normal है, पर क्या वह आनन्दमय है? आप सब बातें समझ पा रहे हैं?

तीन अवस्थाएँ हम आपको बता रहे हैं, यह skin वैसे ही है क्या यह आनन्दमय है? नहीं है। इसके ऊपर खारिश हुई, हटाया तो आपको थोड़ा relief हुआ, पर आनन्दमय फिर भी नहीं है।

आनन्दमय एक अलग अवस्था है, वह कृष्णमय होने को आनन्दमय होना कहते हैं। आपसे कोई पूछे, आप आनन्द हमेशा चाहते हो? ठीक है? चन्द्र मोहन जी! आनन्द चाहते हो? तो कोई आपसे पूछे, आप आनन्द चाहते हो, बात तो ठीक है... आपकी priorities क्या-क्या हैं? पहली priority- family, second - business, third - health, fourth - kids, fifth - यह, sixth - वह... भगवान् का भी कोई number है? 'अरे! भगवान् तो मन में हैं।' हाँ तो फिर आपके मन में भी वैसे ही आनन्द रहेगा फिर। आप चाहते आनन्द हो, आनन्द आपकी priority list में ही नहीं है, भगवान् आपकी priority list में ही नही हैं, आपको ज़रूर..., आनन्दमय आप होगे... किसको धोखा दे रहे हो? आपकी priority..., कोई आपसे पूछे, आपकी priorities क्या-क्या हैं? Job? Family? Health? Wealth? This- that... सारी उँगलियाँ हो जाएँगी, भगवान् कहीं नहीं आएँगें, जबकि हर उँगली में..., मेरी priority...

कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण
कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण हे !

अब यह जो इच्छाएँ हैं, जो यह पागलपन का सूचक हैं कि हम कृष्ण के अलावा कुछ भी चाहते हैं तो यह क्या है? कृष्ण के अलावा कुछ भी चाहना क्या है? पागलपन का सूचक, क्योंकि कृष्ण ही आनन्द हैं।

हम यह जो प्रवचन कर रहे हैं, हरि कथा कर रहे हैं, हम यहाँ आपको धार्मिक बनाने नहीं आए हैं, religious बनाने नहीं आए हैं। यह हिन्दु, मुस्लिम, सिख, ईसाई, याहूदी, जैन..., ये सब religions हैं, हम आपको religious बनाने नहीं आए, हम आपको क्या बनाने आए हैं? 'धार्मिक बनाने', और आपका धर्म क्या है? क्या धर्म है आपका एक ही? आपका एक ही धर्म है 'आप आनन्द चाहते हो'। हम आपको आनन्द देने आए हैं बस, हम आपको कोई सिख, मुस्लिम, हिन्दु, मुसलमान बनाने के लिए नहीं आए हैं। आप आनन्दमय रहें केवल यही इच्छा है, religious बनाना नहीं इच्छा।

यह जितने भी material desires होते हैं, हमारी जो इच्छाएँ होती हैं, जिनको हम इच्छा-पूर्ति, desire-पूर्ति को आनन्द पूर्ति की संज्ञा दे देते हैं, यह बहुत ही दुर्भाग्य की बात है। ये जो इच्छाएँ हैं, material desires होना, material desires क्या होते हैं?

Desires limit you...

ये थोड़ी गम्भीर बाते हैं, जो... जो पुराने भक्त हैं समझ पाएँगे... Desires limit you ! They limit your happiness, so-called happiness. *प्रभु सर्वत्र...*

"हरि व्यापक सर्वत्र समाना।
प्रेम ते प्रकट होहिं मैं जाना।।"

(श्रीरामचरित मानस)

प्रभु क्या हैं? 'आनन्दमय हैं'। वे कहाँ पर हैं? व्यापक हैं, सर्वत्र हैं, समान हैं सब जगह पर। परन्तु जब हम इच्छा करते हैं, सोचते हैं इसके अलावा आनन्द कहीं है ही नहीं। आप सोच रहे हैं? That so called desire limits you... when you desire anything, you become the property of your desires... आप समझ रहे हैं बात को? When you desire anything, जब आप कोई इच्छा करते हैं, then you become the property of your desires..., आप अपनी इच्छाओं की वस्तु बनकर रह जाते हैं। कि इसके अलावा सुख नहीं है कहीं पर भी। मेरी बेटी जब तक यहाँ शादी नहीं करेगी तो मैं सुखी नहीं होऊँगा। अरे भाई ! या मेरा बेटा जब तक ठीक नहीं हो जाएगा तो मैं सुखी..., या मैं यह business जब तक नहीं कर लूँगा।

Desires limit you... जो भी desires हैं वे किसलिए होने चाहिए? आपको इच्छा किसलिए करनी चाहिए? आनन्द मिले। कि किसी और के लिए...? तो अगर आप कोई इच्छा कर रहे हैं जिससे आपको आनन्द नहीं मिलेगा, तो यह बिमारी हुई कि नहीं? आप

कोई ऐसी इच्छा कर रहे हैं जिससे आनन्द नहीं मिलेगा, तो यह क्या हुआ? Disease... हम सबको थोड़े बहुत रोग होते हैं..., थोड़े बहुत रोग होते हैं? रोग, disease... हाँ कि fracture किसी को हो सकता है, कभी-कभार किसी का पीठ का operation... वह तो कभी-कभी है, पर यहाँ मानसिक रोगी..., मानसिक रोगी समझते हैं? जिसको कुछ लोग बोलते हैं- mental... आप बोलेंगे mental तो थोड़े बहुत लोग होते हैं, हज़ार, दस हज़ार में कोई एक होता है mental... 'Mental' मतलब मानसिक रोगी।

जो व्यक्ति खुद चाह कर ऐसी कोई चीज़ चाहता है जिससे उसे आनन्द न मिले और वह बार-बार वैसी चीज़ें चाहता है तो उसे क्या बोलेंगे? 'मानसिक रोगी'। Cent percent..., cent percent लोग मानसिक रोगी हैं, cent percent मानसिक रोगी। अगर आप कृष्ण के अतिरिक्त कुछ भी चाह रहे हो तो आपको रोग है..., 'मानसिक रोग', disease... आप आनन्द के अलावा कुछ और चाह रहे हो तो आप क्या हो? Normal आदमी हो?

बच्चे का सुख आनन्द नहीं है, बच्चे का सुख बच्चे का सुख है। हम चाहते हैं मेरा..., ज़्यादातर, 'मेरा परिवार सुखी रहे'। आपने किसी शास्त्र में, किसी संत से सुना है कि कोई परिवार सुखी कि कोई, कोई formula होता है? जीव तो 'आनन्दी भवति' भगवान् को प्राप्त करके, यह तो है, कभी सुना है 'परिवार आनन्दी भवति'? परिवार होता है - 'individuals का समूह'। तो जो व्यक्ति भगवान् से जुड़ेगा वह आनन्दमय हो जाएगा, जो नहीं जुड़ेगा वह नहीं होगा।

और जैसे कि एक चंदन का वृक्ष होता है... एक जगह पर हो, उसकी सुगन्धी कहाँ तक जाती है? सर्वत्र जाती है। उसी प्रकार से अगर आप आनन्दमय हो जाएँगे, भगवन्मय हो जाएँगे, तो आपके परिवार में वह सुगन्धी अपने आप फैलेगी। आप ही दुःखमय हैं भगवान् के..., भगवान् से, कृष्ण भगवान् की चेतना आप में नहीं है, भगवान् से आप नहीं जुड़े भक्ति के माध्यम से, आप ही खुश नहीं हो, तो जहाँ पर रहोगे वहाँ क्या बिखेरोगे? दुःख। **एक दुःखी व्यक्ति क्या करेगा? अपने परिवार में भी दुःख ही फैलाएगा और जो आनन्दमय, कृष्ण भक्तमय, कृष्णभक्त बन जाता है वह हर जगह आनन्द ही आनन्द फैलाता है, चंदन की तरह।**

अब कोई सोचे, कि आपने Spirituality adopt की है? ऐसे बात करेंगे..., आपने Spirituality adopt की है? You have adopted Spirituality...? You have adopted Spirituality...? You have adopted Spirituality...? You have adopted humanity ! आपने मनुष्यपन को adopt किया हुआ है, आप तो Spiritual ही हो, इसमें adopt करने

की कौन सी बात थी? इसमें adopt क्या करना है? आप क्या हो? चिराग, हाँ..., you have adopted..., you have adopted CA course... similarly you have adopted humanity... अच्छा, you are, you are Spiritual, in essence you are spiritual being. 'Soul is Spiritual'... You have adopted humanity, you have adopted commerce stream...? You have adopted humanity. You got nothing do with commerce, nothing do with humanity. आपको सिर्फ़ एक चीज़ से मतलब है - आनन्द से। और मनुष्य एक ऐसी अद्वितीय स्थिति है जिसमें आनन्द प्राप्त... आनन्द को आप जान सकते हो और आनन्द को आप प्राप्त कर सकते हो।

आप एक बात बताइए, आप लोगों का जब business बहुत अच्छा चल रहा हो या परिवार में सब कुछ बहुत अच्छा चल रहा हो तो क्या भक्ति के अन्दर मन बहुत आसानी से लग जाता है क्या भगवान् में? नहीं लगता...? नहीं लगता न? जब बहुत अच्छा सब चल रहा हो, करोड़ों रुपये हर महीने की income हो और बच्चे अच्छे हो गए हों ..., कोई CA कर रहा हो, कोई BA कर रहा हो, तो मन लगता है Spirituality में तब? भगवान् में? नहीं। अच्छा दूसरा प्रश्न पूछते हैं... कि आपको बहुत heavy losses हो रहे हों और आपके एक बच्चे के हाथ कट गया हो, fracture, तो क्या मन लगता है भगवान् में बहुत आसानी से? तो न सुख में आसानी से लगता है न दुःख में आसानी से लगता है। देखिए, किसी शास्त्र में यह नहीं बोला गया कि आपका मन लग जाएगा, क्या बोला गया है? लगाओ...

"चंचलं हि मनः कृष्ण प्रमाथि बलवद्दृढम्।
तस्याहं निग्रहं मन्ये वायोरिव सुदुष्करम्।।"

(गीता-६.३४)

'लगाओ तुम', तुम्हारे बोलने से नहीं लग जाएगा, तुम्हारे... अगर तुम सुखी अवस्था में हो तो भी मन नहीं लगेगा और दुःखी में हो तो भी नहीं। तुम यह समझ लो कि तुमको आनन्द चाहिए, तो तुम्हारा मन अपने आप तुम वहाँ लगा दोगे। तुम्हारे को समझ आ जाए कि तुम्हारा स्वार्थ जो है भगवान् से ही सिद्ध होगा। तुम्हें आनन्द चाहिए? वह केवल भगवान् हैं। तुम अपना चाहे घर में आग लगी है, तो भी तुम्हारा मन भगवान् में रहेगा और घर में चाहे छप्पन भोग हो रहा हो तब भी तुम्हारा मन भगवान् में, क्योंकि न आग से happiness मिलेगी न छप्पन भोग से। आनन्द तो आनन्द से ही मिलेगा, भगवान् से ही मिलेगा।

जो हम यह स्वप्नवत् अवस्था है हमारी, हम equate करते हैं अपनी इच्छा पूर्ति को आनन्द से, यह एक fantasy है। Fantasy समझते हैं? 'कल्पना'। यह कल्पना का दुष्परिणाम है कि किसी इच्छा-पूर्ति को हम आनन्द पूर्ति समझ लेते हैं। इच्छा पूर्ति को आनन्द पूर्ति समझ लेना, यह कल्पना का परिणाम है केवल। Desires मतलब 'कामना'। कामना मतलब अगर हम..., अगर हम भगवान् का दृष्टिकोण देखें, वाल्मीकि..., वाल्मीकि जी का दृष्टिकोण देखें तो...

"जहाँ काम वहाँ राम नहीं,
जहाँ राम, नहीं काम।"

काम मतलब 'कामना'। जहाँ desire, वहाँ आनन्द नहीं। काम... राम मतलब 'आनन्द', कृष्ण मतलब 'आनन्द'। जहाँ कामना वहाँ आनन्द नहीं, जहाँ आनन्द वहाँ नहीं कामना। यह शास्त्र का निर्णय है, यह हमसे पूछकर नहीं लिया जाएगा, यह निर्णय है भगवान् का। *'जहाँ काम वहाँ राम नहीं, वहाँ आनन्द नहीं... जहाँ राम नहीं - काम।'* यह Life Solution है, यह अगर जब तक हम जीवन में नहीं अपनाएँगे तो जीवन में सुख का लवलेश भी नहीं प्राप्त होगा। हमें सुख कभी स्वप्न में भी प्राप्त नहीं हुआ कभी, आप वास्तविक को तो छोड़ दीजिए। हमें सुख का vague रूप से दर्शन..., यह भी नहीं पता सुख क्या होता है।

हम खुजलाने को ही सुख मानते हैं, इच्छा पूर्ति को। और इच्छा क्यों करते हैं? आनन्द के लिए। इच्छा इसलिए करते हैं, कोई चीज़ में? क्योंकि हमें आनन्द मालूम नहीं है क्या है। आनन्द कृष्ण हैं, हर क्षण अगर आप आनन्द चाहते हैं तो हर क्षण आप..., हमें कृष्णमय होना होगा। आपका परिवार होगा, सब कुछ होगा, BA, CA, शादी सब होगा, पर आनन्द उससे नहीं होगा। आनन्द तो भगवान् से जुड़े रहने से ही होगा निरन्तर। और कलियुग में केवल एक ही उपाय है आनन्दमय अवस्था में रहने का। वह क्या है?

"हरे कृष्ण हरे कृष्ण, कृष्ण कृष्ण हरे हरे।
हरे राम हरे राम, राम राम हरे हरे।।"

(महामंत्र)

और जब हम कुछ..., जब हम आनन्द चाहते हैं, तो आँख से आनन्द चाहते हैं, कुछ दिख जाए, जो हम चीज़ देखना चाहते हैं या कुछ खा लें जिह्वा से, तो हमारा आनन्द 'यहाँ' तक सीमित है, एक inch के अन्दर... बताइए, आनन्द कभी सीमित होता है? आनन्द कभी सीमित..., आनन्द का मतलब ही है..., *'प्रतिक्षणं वर्धमानम्'*, 'हर क्षण जो बढ़ता रहे' न कि इतने में सीमित हो जाए। जब खाने में आनन्द चाहते हो तो एक inch

में आपका आनन्द सारा सीमित है। और जब आप देखने में चाहते हो तो? एक inch में आनन्द सीमित है। बताओ! यह हमारा आनन्द..., सुनने में आनन्द चाहते हो तो वही एक inch में हमारा आनन्द..., आनन्द ऐसा होता है क्या? और जो भक्त का आनन्द होता है वह क्या होता है? शरीर के एक-एक रोम में...

"महाप्रभोः कीर्तन-नृत्य-गीत-वादित्र-माद्यन्-मनसो रसेन।
रोमाञ्च-कम्पाश्रु-तरङ्ग-भाजो, वन्दे गुरोः श्रीचरणारविन्दम्।।"

(श्रीगुर्वष्टक-२)

जो आनन्द होता है संत का, भक्त का, वह प्रत्येक रोम में होता है, inch में नहीं होता। हाँ... पूरा अस्तित्व आनन्द से भरा होता। देह चिन्मय हो जाता है। आनन्दमय।

हम चाहते हैं, desires से आप आनन्द को limited मत करो, आनन्द तो इस अवस्था में आना है। *'रोमाञ्च'*..., जब 'रोमाञ्च' होता है, कम्पन्न होती है, कहाँ होती है वह? नखाग्र से शिखाग्र तक। पाँव के नाखून से लेकर सिर के अग्र भाग तक। यह होता है आनन्दमय जीवन, यह थोड़े ही न यह आनन्दमय जीवन। यह क्या है?

सूरदास आनन्द में रहते थे उनका यह, यह..., यह topic से कोई लेना देना ही नहीं था, फिर भी आनन्द में थे। जो..., जिनको सुनाई नहीं देता क्या वे आनन्द में नहीं रह सकते? नहीं।

देखिए यह जो हमारा प्रवचन है यह हमारे लिए आप कुछ नहीं कर रहे, आप तो..., यह हम चाहते हैं आप अपने ऊपर कृपा करें। भगवान् को अपने जीवन में हर क्षण जोड़ें। आप जो कर रहे हैं परिवार वह तो रहना ही है, जिसने जहाँ रहना है वह रहे, घर छोड़ना नहीं है। हमारे यहाँ सारे ग्रहस्थ हैं, आप देख रहे हैं? सभी ग्रहस्थ हैं, घर किसी ने नहीं छोड़ना। पर आनन्दमय होना, तो कृष्णमय होने के अलावा कोई विकल्प ही नहीं है। अपने ऊपर कृपा करें, हर क्षण भगवान् से अपने आप को जोड़कर रखें और यह निरन्तर साधुओं के मार्गदर्शन में ही होगा। जब बच्चे बड़े हो जाते हैं..., हमारे बच्चे हो जाते हैं, हम बच्चों को क्या आर्शीवाद देते हैं? 'बेटा सदा खुश रहो, सदा खुश रहो, सदा खुश रहो।' और अगर वह भक्ति करने लग जाए तो? अगर १७ साल का कोई बच्चा हो, वह भक्ति कर रहा हो, तो क्या बोलोगे? 'बेटा! क्या हो गया तुझे?'अरे भई! भगवान् से जुड़ रहा है, आनन्दमय हो रहा है आपको क्या हो गया है? यह तो प्रश्न आपसे पूछना चाहिए

आपको क्या हुआ? अज्ञानता में आप हो..., खुश रहो, बिना भगवान् के..., वे माँ बाप हैं..., बहुत अच्छी बात है जय हो तुम्हारी।

"मातृदेवो भव, पितृदेवो भव।
आचार्यदेवो भव, अतिथिदेवो भव।।"

(तैत्तिरीय उपनिषद्)

मतलब देवता समान बनो, यह नहीं कि जो माता है वह देवता है, ऐसा नहीं है। देवता मतलब, जो सही बात बोलता है, देव तुल्य है, भगवद् तुल्य है। भगवान् की वाणी जो नहीं बोलता, वह माता-पिता नहीं है शास्त्र के अनुसार, वह क्या है?

"आहार-निद्रा-भय-मैथुनं च
सामान्यमेतत् पशुभिः समानाः"

अगर आप भगवान् की वाणी के साथ अलग कुछ बात बोल रहे हो तो वह तो असुर की वाणी है। अरे बच्चों हमेशा खुश रहो, मतलब - हमेशा आनन्द, भगवद्मय रहो। और यह..., *'सुख सम्पत्ति घर आवे, कष्ट मिटे तन का'* यह सब... यह, यह पता नहीं किस अज्ञान मूर्ख व्यक्ति ने निकाली हैं चीज़ें। और यह फिर से वही बात है... *आहार-निद्रा-भय-मैथुनं च*... बच्चों के साथ रहो, जियो, सोओ, खाओ-पियो और मर जाओ। और *सामान्यमेतत् पशुभिः समानाः*, बिल्कुल पशु है व्यक्ति जो यह सुख सम्पत्ति घर आवे कष्ट मिटे... जो यह प्रार्थना करता है वह पशु है। और सिर्फ़..., भक्त केवल एक ही प्रार्थना करता है -

कृष्ण कृष्ण, कृष्ण कृष्ण, कृष्ण कृष्ण कृष्ण हे!
सर्वेश्वर श्रीकृष्ण भगवान् की... जय!
निताई गौर प्रेमानन्दे!